प्रवाह

निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना वर्ष : 1948

हर समाज में, परिवार में ज्ञान ही शक्ति होती है, सूचना स्वाधीन बनाती है, शिक्षा प्रगति का आधार बनती है।
-कोफी अन्नान

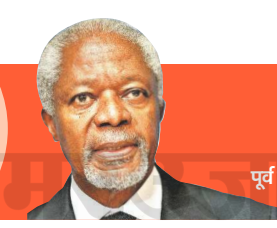

पूर्व संयुक्त राष्ट्र महासचिव

मानसून में दो-चार दिन की देरी से खरीफ की बुआई पर भले ही बहुत फर्क न पड़े, लेकिन यदि इस वर्ष मानसून कमजोर हुआ तो 23 मई के बाद नई दिल्ली में बनने वाली सरकार को आते ही एक बड़ी चुनौती का सामना करना पड़ सकता है।

अगर बारिश में देर हुई

निजी

मौसम कंपनी स्काई मैट के बाद मौसम विभाग ने भी इस वर्ष दक्षिण पश्चिम मानसून के देर से पहुंचने का अनुमान व्यक्त किया है, जिसके मुताबिक यह छह जून को केरल के तट पर पहुंच सकता है। हालांकि मौसम विभाग का कहना है कि उसके अनुमान में चार दिन की घट-बढ़ हो सकती है। मौसम विभाग ने मानसून का दीर्घ अवधि औसत (एलपीए) 96 फीसदी रहने का अनुमान व्यक्त किया है, जिसे सामान्य के आसपास कहा जा सकता है, लेकिन स्काई मैट का अनुमान है कि एलपीए 93 फीसदी रह सकता है, जो कि सामान्य से कम है। मौसम विभाग का दावा है कि पिछले 14 वर्षों में मानसून के आगमन को लेकर उसका अनुमान सिर्फ एक बार 2015 में ही गलत साबित हुआ था। दरअसल देश में होने वाली कुल 70 फीसदी वर्षा मानसून पर ही निर्भर होती है और देश की पचास फीसदी से भी अधिक आबादी खेती पर निर्भर है, और हाल के कुछ वर्षों में कृषि क्षेत्र में जिस तरह से हताशा बढ़ी है, उसमें इन अनुमानों का महत्व सहज समझा जा सकता है। यह स्थिति इसलिए है, क्योंकि अब भी खेती का बड़ा हिस्सा वर्षा के जल पर ही निर्भर है। महाराष्ट्र के मराठवाड़ा क्षेत्र में तो पहले ही सूखे के आसार नजर आ रहे हैं, जहां हाल के वर्षों में भीषण जल संकट देखा गया है। इसके अलावा उत्तरी कर्नाटक और मध्य प्रदेश सहित कई राज्यों को लेकर व्यक्त किए गए अनुमान से वहां भी औसत से कम वर्षा हो सकती है, जिसका असर कृषि उत्पादन पर पड़ सकता है।

यों तो मौसम विभाग ने अल नीनो के असर के बारे में कोई ठोस अनुमान व्यक्त नहीं किया है, लेकिन कई विशेषज्ञ मानसून की देरी के लिए इसे भी एक वजह बता रहे हैं। यदि अल नीनो का प्रभाव और घनीभूत हुआ, तो निश्चित रूप से यह कृषि क्षेत्र के लिए अच्छी खबर नहीं होगी। पिछले साल मौसम विभाग के अनुमान के विपरीत वर्षा सामान्य के विपरीत 91 फीसदी ही हुई थी, जिससे आधिकारिक तौर पर सरकार ने भी माना था कि खरीफ की बुआई 20 फीसदी कम हुई थी। मानसून में दो-चार दिन की देरी से खरीफ की बुआई पर भले ही बहुत फर्क न पड़े, लेकिन यदि इस वर्ष मानसून कमजोर हुआ तो 23 मई के बाद नई दिल्ली में बनने वाली सरकार को आते ही एक बड़ी चुनौती का सामना करना पड़ सकता है।

चुनाव आयोग की साख

इस बार के लोकसभा चुनाव में हर मौसम का स्वाद है, लेकिन इस जीवंत, शोर-शराबे से भरी लोकतांत्रिक कवायद में केंद्रीय निर्वाचन आयोग में एक गिरावट दिख रही है। चुनाव आयोग का यह सांविधानिक कर्तव्य है कि वह रेफरी की तरह काम करे और चुनाव को निष्पक्ष बनाने के लिए हर शक्तियों का इस्तेमाल करे। लेकिन तीन सदस्यीय चुनाव आयोग उदासीन, लापरवाह और मैदान से बाहर के तीसरे अंपायर की तरह दिखता है, जो कभी-कभी गहरी नींद से जाग जाता है या सुप्रीम कोर्ट के निर्देश पर अपनी उपस्थिति का एहसास कराता है।

अब जरा सात चरणों में फैली लंबी चुनाव प्रक्रिया को देखें। निर्वाचन क्षेत्रों का चयन सबसे अधिक व्यक्तिपरक या लगभग राजनीतिक है। उत्तर प्रदेश और बंगाल में सात चरणों में चुनाव हो रहे हैं, जबकि तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश और तेलंगाना में एक ही दिन में चुनाव हुए, आंध्र प्रदेश में तो विधानसभा के चुनाव भी हुए। निश्चित रूप से हिंसा और धांधली के भय पर अवश्य ध्यान दिया जाना चाहिए, लेकिन नहीं भूलना चाहिए कि बंगाल में औसत मतदान 80 फीसदी से अधिक हुआ है। चुनाव के क्षेत्र में शोध करने वाले कुछ विद्वानों का मानना है कि 2019 के चुनावी कार्यक्रम का लाभ भाजपा को मिला है, क्योंकि इसने पार्टी कार्यकर्ताओं की फौज के माध्यम से भाजपा को बूथ स्तर तक पहुंचने का मौका दिया है। इसने सत्ता विरोधी रुझान खत्म करने में उसकी मदद की, क्योंकि पार्टी कार्यकर्ता ज्यादा इलाकों तक पहुंच सकते हैं और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जैसे प्रचारक सचमुच देश के हर क्षेत्र को कवर कर सकते हैं। कई शोधकर्ताओं का मानना है कि जो पार्टी सत्ता में होती है, उसे चुनाव की लंबी प्रक्रिया से लाभ मिलता है। इतने लंबे और उबाऊ चुनाव कार्यक्रम के लिए चुनाव आयोग स्वयं दोषी है। बंगाल में सात चरणों में चुनाव कराने से लाभ कम, हानि ज्यादा हुई और चुनावी हिंसा में कोई कमी नहीं आई। कानून व्यवस्था बनाए रखने की जिम्मेदारी राज्य सरकार की है। केवल अर्धसैनिक बलों को भेजने से समस्या का समाधान नहीं होता है, क्योंकि संघीय प्रणाली के अनुसार केंद्रीय सुरक्षा दल जिला प्रशासन के अधीन होते हैं। यदि केंद्र और राज्य सरकार में टकराव हो, तो राज्य अपनी मनमानी कर सकता है।

राजनीतिक दलों, अदालतों, मीडिया और समाज के अन्य वर्गों को चुनाव आयोग के कामकाज और आदर्श आचार संहिता पर फिर से विचार करने की आवश्यकता है।

रशीद किदवई, वरिष्ठ पत्रकार

चुनाव आयोग की सुस्ती तब दिखी, जब उसने गुजरात के भाजपा प्रमुख को दंडित करते हुए उन्हें 48 घंटे चुनाव प्रचार से प्रतिबंधित किया, जबकि राज्य की 26 लोकसभा सीटों पर चुनाव पहले ही हो चुका था! उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बजरंग बली बनाम हजरत अली का नारा दिया, लेकिन चुनाव आयोग उन्हें प्रचार से प्रतिबंधित करने के बावजूद प्रतिबंध की अवधि के दौरान खबरिया टीवी चैनलों पर हनुमान चालीसा का जाप करते हुए असहाय की तरह देखता रहा। विजयी योगी ने टीवी चैनलों से कहा, मुझे बजरंग बली का नाम लेने पर दंडित किया गया, पर प्रतिबंध की अवधि के दौरान मैंने उनके नाम का जाप किया। सवाल उठता है कि क्यों चुनाव आयोग ऐसे निर्देश जारी नहीं करता कि प्रतिबंधित नेताओं को प्रतिबंध की अवधि के दौरान टीवी चैनल न दिखाएं!

सिर्फ चुनाव प्रचार ही जहरीला नहीं है, जहां चुनाव आयोग को निराश, असहाय और मूक दर्शक के रूप में देखा जा सकता है। सरकार ने कई विपक्षी नेताओं और उनसे सहानुभूति रखने वाले लोगों के घर पर आयकर विभाग की छापेमारी करवाई और राष्ट्रीय सुरक्षा को मुद्दा बनाया, जिसे चुनाव आयोग ने मुद्दा न बनाने के लिए कहा था।

चुनाव आयोग की यह निष्क्रियता 2014 की उसकी सक्रियता के ठीक विपरीत है, जब उसने पश्चिमी घाट में प्राकृतिक गैस मूल्य निर्धारण और पारिस्थितिक रूप से संवेदनशील क्षेत्रों को अधिसूचित करने से संबंधित सरकार के कुछ नीतिगत फैसलों को स्थगित करने की सिफारिश की थी। चुनाव आयोग ने तब आदर्श आचार संहिता लागू की थी। चुनाव के पिछले कुछ चरणों पर सरसरी नजर डालें, तो पता चलता है कि आदर्श आचार संहिता का पालन नहीं किया गया। किसी भी दल में आचार संहिता की कोई झलक नहीं दिखी, चाहे वह एनडीए के सहयोगी दल हों, या यूपीए के या क्षेत्रीय दल।

आदर्श आचार संहिता इस धारणा पर आधारित है कि राजनीतिक दल और उम्मीदवार औचित्य, नीति और नैतिकता के मुद्दे को महत्व देंगे। इन उदात्त सिद्धांतों के अभाव में वेस्टमिंस्टर मॉडल राख में मिल जाता है। संसदीय लोकतंत्र का पालना कहे जाने वाले ब्रिटेन में कोई लिखित संविधान नहीं है। वहां राजनीतिक चूक दुर्लभ है और नियम व कानूनों की तुलना में परंपरा का ज्यादा महत्व है। लेकिन भारत का अनुभव इसके ठीक उलट है। कड़े कानूनी आवरण के बिना आदर्श आचार संहिता अव्यावहारिक और दंतहीन है।

भारतीय राजनीतिक दलों, अदालतों, मीडिया और समाज के अन्य वर्गों को चुनावी गड़बड़ी और चुनाव आयोग के कामकाज के पूरे मुद्दे पर फिर से विचार करने, आदर्श आचार संहिता की जरूरत, चुनाव सुधारों और अन्य मुद्दों पर विचार करने की आवश्यकता है। यह एक क्रूर मजाक है कि एक संसदीय चुनाव में (दस लाख से ज्यादा मतदाता वाले) उम्मीदवार के खर्च की सीमा 70 लाख रुपये है, जो कि प्रति मतदाता 70 पैसे बैठता है! वास्तव में इस प्रणाली ने हर उम्मीदवार और निर्वाचित प्रतिनिधि को भ्रष्ट और गैरकानूनी बना दिया है।

चुनाव आयोग को व्यापक, जवाबदेह और पारदर्शी बनाने की जरूरत है। आसानी से प्रभावित होने वाले बाबूओं के बजाय सिविल सोसाइटी के सदस्यों, प्रमुख नागरिकों, न्यायपालिका के सेवानिवृत्त सदस्यों को राज्य एवं केंद्रीय चुनाव निकायों में लैटरल इंट्री दी जानी चाहिए। आदर्श आचार संहिता को भी फिर से दुरुस्त किए जाने और फिर से लिखे जाने की जरूरत है, ताकि इसे लागू किए जाने से पहले सार्वजनिक क्षेत्र में इस पर व्यापक चर्चा हो। अगर चुनाव खर्च की सीमा बढ़ाकर पांच करोड़ रुपये या उससे अधिक करने की आवश्यकता है, तो ऐसा ही हो। सार्वजनिक फंडिंग से चुनाव कराना एक अन्य मुद्दा है, जिस पर बहस, चर्चा और संभवतः कार्यान्वयन की आवश्यकता है। लेकिन क्या कोई राजनीतिक इच्छाशक्ति है, जो राजनीतिक लाभ से निर्देशित न हो? यही भारतीय लोकतंत्र की असली परीक्षा है।

अंतर्ध्वनि

>> अज्ञेय

मैं अकेलापन चुनता नहीं हूं, केवल स्वीकार करता हूं

मैं स्वल्प-संतोषी हूं। पतझर के झरते पत्ते से अधिक सुंदर किसी चीज की कल्पना नहीं कर पा रहा हूं। यह धीरे-धीरे, लय के साथ डोलते हुए झरना-मानो धरती के गुरुत्वाकर्षण से मुक्त होकर, भार-मुक्त तिरना-और उस मुक्त होने में लय पहचानना और उसके साथ एक-प्राण होना-सृष्टि मात्र में इससे बड़ा सौभाग्य क्या और इससे बड़ा सौन्दर्य क्या...! पत्ते यों झरते जाएं और मैं उन्हें देखता जाऊं-लगता है कि इसी में कालमुक्त हो जाऊंगा! यों यह बात पत्ते के बारे में जितनी है, खुद मेरे बारे में उससे अधिक है। यों भी जानता हूं कि लययुक्तगति का मेरे लिए प्रबल आकर्षण है-कोई भी लययुक्त गति-फुलचुही का पंख फड़फड़ाते हुए क्षण-भर को अधर में अटक जाना; अच्छी तैराकी; घुड़दौड़ की सरपट; अबाबील की लहराती या बाज की सीधी उड़ान; हिरन की छलांग जो अपने शिखर पर एक साथ ही निश्चेष्ट और निरायास अग्रसरण हो जाती है-कथकिये के चक्कर या ततकार... और यही क्यों, सांप का डोलना, नाली में काई का लहराना, केंचुए की चाल में लहराता-बढ़ता संकुचन-आस्फालन... लट्टू का घूमना, कुम्हार के चाक पर सकोरे का रूपायन, इंजिन के शाफ्ट की खड़कन के साथ भाप की सीटी की 'ताल वाद्य कचहरी', कड़ाही में जलेबी के घोल की चुअन... सूची का कोई अंत है? एकाएक सोचता हूं कि कितनी सुंदर है दुनिया-क्योंकि कितनी लययुक्त गतियां दीखती हैं इसमें! यह हो कैसे सकता है कि कोई अपना रास्ता चुने भी, और उस पर अकेला भी न हो? राजमार्ग पर चलने वाले रास्ता नहीं चुनते; रास्ता उन्हें चुनता है। नहीं। मैं अकेलापन चुनता नहीं हूं, केवल स्वीकार करता हूं। अकेलेपन को मैंने वरीयता नहीं दी, लेखक होने के नाते दूसरे तक पहुंचना-उसके भीतर पैठ कर उसे अपने भीतर पैठने देना-पैठाना-मैंने अनिवार्य माना है।

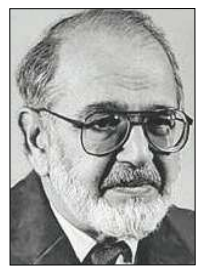

-दिवंगत हिंदी साहित्यकार

मंजिलें और भी हैं

>> अमृत देशमुख

दूसरों का ज्ञान बढ़ाने को किताबें पढ़कर सुनाता हूं

मैं पेशे से चार्टर्ड अकाउंटेंट हूं। पढ़ाई खत्म करके मैंने पांच साल मुंबई स्टॉक मार्केट में काम किया। नौकरी के दौरान मुझे प्रमोशन मिले। अच्छा वेतन होने के बावजूद मेरे मन में जीवन को लेकर संतोष नहीं था। इसके बाद मैंने सोचा कि खुद का काम करते हैं। फिर मैंने तीन नए-नए स्टार्ट-अप शुरू किए, जो विफल रहे। मैं तनाव में जी रहा था, स्टार्ट-अप में काफी पैसा भी डूब गया। नौकरी करने का मेरा मन नहीं था। मेरे बड़े भाई हमेशा कहते हैं कि अगर तुम्हारे इस सवाल का जवाब नहीं मिल रहा कि जिंदगी में आगे क्या, तो कोई भी किताब पढ़ने लगो, जवाब मिलेगा। उनकी बातें मानकर मैं किताबें पढ़ने लगा। कुछ दिनों बाद मुझे फिर टिक-टॉक ऐप पर वीडियो देखने की लत लग गई।

एक बार उसी में मैंने अमेरिका में रहने वाले सलमान खान को देखा, जिसका यू-ट्यूब पर *खान एकेडमी* के नाम से चैनल है। उसने लाखों की नौकरी छोड़ यू-ट्यूब पर अपने पसंदीदा विषय गणित के वीडियो डालने शुरू किए थे। एक वीडियो में उसने समझाया कि कैसे हम अपनी प्रतिभा को समाज में निवेश करते हैं, मगर पैसों के लिए नहीं। यह आइडिया मुझे अच्छा लगा और समझ में आया कि मेरे स्टार्ट-अप क्यों फेल हुए। दरअसल मैं पैसों पर ध्यान केंद्रित कर रहा था। इसी बीच एक दिन दोस्त के कहने पर मैं उसके साथ फिल्म *बाहुबली* देखने गया। फिल्म शुरू होने में पंद्रह मिनट थे तो दोस्त को *7 हैबिट्स ऑफ हाइली इफेक्टिव पीपुल* किताब के बारे में बताने लगा, जो मैं उन दिनों पढ़ रहा था। उसने कहा, तुमने इतने अच्छे से किताब का सारांश समझाया कि इसे पढ़े बिना मैं जान गया हूं कि इसकी खासियत क्या है। क्यों नहीं तुम ऐसे ही अपनी पढ़ी किताबों के बारे में मुझे बताते रहो। तुम्हारी रीडिंग हैबिट से मेरा ज्ञान बढ़ेगा। यह बात मैंने तुरंत 'सोशल रिटर्न ऑन इनवेस्टमेंट' से कनेक्ट की। मैंने सोचा कि मैं उन लोगों को अपनी पढ़ी किताबों का सार बता सकता हूं, जिनके पास पढ़ने का समय नहीं है, पर वे पढ़ना चाहते हैं। मैंने थोड़ी छानबीन की, तो पता चला कि सोशल मीडिया या इंटरनेट पर ऐसा काम कोई नहीं कर रहा था। मेरे दिमाग में एक विचार आया कि, न तो मैं वेबसाइट बना सकता हूं और न ऐप, क्या करूं? इसका जवाब फिर एक किताब में मिला। मैं किताब पढ़ रहा था *अनपोस्टेड लेटर*। इसमें लेखक ने लिखा कि आपके पास क्या है, यह मायने नहीं रखता, बल्कि आपके पास जो है, उसके साथ आप जो करते हो, वह महत्वपूर्ण है। इसके बाद मैंने व्हाट्सऐप को अपना साथी बनाया। मैंने व्हाट्सऐप पर अपने ग्रुप में लोगों को सार-संक्षेप में लिखकर किताबों के बारे में बताना शुरू किया। परंतु कुछ दिनों में पता चला कि कई लोग वह भी नहीं पढ़ रहे। तब मैंने ऑडियो में सार-संक्षेप रिकॉर्ड करना शुरू किया। इससे कमाल हो गया और मुझे बहुत मैसेज आने लगे कि और किताबों के बारे में बताऊं। इससे मेरा हौसल बढ़ा और ज्यादा से ज्यादा लोग मेरे व्हाट्सऐप से जुड़ने लगे। तब कुछ समय बाद मैंने अपना ऐप बनवाया, जिसका नाम रखा, बुकमार्क। यह धीरे-धीरे लोकप्रिय होने लगा। अब तक इस ऐप को लगभग दस लाख लोग डाउनलोड कर चुके हैं। यह मुफ्त है। बीते तीन साल में मैंने करीब डेढ़ सौ किताबों के सार-संक्षेप यहां अपलोड किए हैं। हर हफ्ते मैं एक किताब के बारे में बताता हूं। मुझे मेरा यह काम उस दिन सार्थक लगने लगा, जब एक नेत्रहीन लड़की ने फोन पर बताया कि उसने बुकमार्क पर मुझे सुनकर ढेर सारी जानकारी हासिल की है।

उन लोगों को अपनी पढ़ी किताबों का सार बताता हूं, जिनके पास समय नहीं है, मगर वे पढ़ना चाहते हैं।

शोर में दबी चुप्पियां

चुनाव भी कैसे बंद जुबान खोल देता है। कठुआ में हुए हादसे पर चुप्पी। दिल्ली में हर चार घंटे में हो रहे एक बलात्कार पर चुप्पी। हापुड़ की उस जली हुई महिला पर चुप्पी। इतनी सारी चुप्पियां अलवर की वीभत्स घटना से क्यों टूटीं, यह फैसला कौन करेगा?

इस चुनाव में बहुत शोर मच रहा है। इस बहुत ही लंबे चुनाव अभियान में बहुत शोर मच रहा है। इस शोर में बहुत कुछ सुनाई नहीं पड़ रहा है। जैसे, झारखंड में भूखे बच्चे मिट्टी खाकर मर गए। उनके मां-बाप का विलाप कहीं सुनाई नहीं पड़ा। इसी शोर में एक बच्ची को कुत्तों ने काट-काटकर मार डाला, लेकिन उसकी चीख भी कोई सुन ही नहीं पाया। ऐसे ही पता नहीं, कितनी चीखें, कितना विलाप चुनाव के इस शोर में, पिछले दो महीने से चल रहे शोर में अनसुना रह गया।

लेकिन अस्पताल के बिस्तर पर पड़ी हुई एक महिला की बहुत ही दबी आवाज में कही गई एक बात सिर्फ सुनाई ही नहीं दे रही है, बल्कि लगातार सुनाई देती चली जा रही है। वह महिला बहुत बुरी तरह से जली हुई है। उसने खुद ही अपने शरीर में आग लगाई। वह भी पश्चिमी उत्तर प्रदेश के हापुड़ जिले के एक थाने के सामने। उस महिला की कहानी बड़ी दर्दनाक है। उसको उसके घरवालों ने एक आदमी के हाथ बेच दिया था। उस आदमी ने उसे कुछ लोगों के घरों में काम करने के लिए भेजा। उन सबने उसकी मजबूरी का फायदा उठाकर उसके साथ बलात्कार किया। लगातार किया और सबने मिलकर भी किया। वह महिला कई बार उन लोगों के खिलाफ शिकायतें लिखवाने के लिए थाने में भी गई, लेकिन उसकी बात किसी ने नहीं सुनी। आखिर में मुक्ति पाने के लिए उसने थाने के सामने ही अपने ऊपर तेल डालकर आग लगा ली।

देखते ही देखते थाने में हड़बड़ाहट मच गई। आनन-फानन में उस महिला को दिल्ली के एक अस्पताल में भर्ती किया गया। वहां उसका बयान लिया गया और फिर अपार दुखों से भरी उसकी दास्तान सामने आई। दिल्ली महिला आयोग की अध्यक्ष ने इस मामले में तुरंत हस्तक्षेप किया और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को सूचित किया। उसके बाद ही न्याय प्रक्रिया की शिथिल पड़ी व्यवस्था कुछ हरकत में आई।

सुभाषिनी सहगल अली

ठीक इसी चुनावी दौर में राजस्थान के अलवर में एक दलित महिला के साथ सामूहिक बलात्कार किया गया। वह घटना भी उतनी ही दर्दनाक है और प्रशासन-व्यवस्था की कमी को उजागर करती है। वह महिला अपने पति या साथी के साथ स्कूटर पर बैठकर कहीं जा रही थी कि रास्ते में खड़े छह लोगों ने स्कूटर रुकवाया और दोनों को पीटा। उसके बाद उन लोगों ने उस महिला के साथ तीन घंटे तक बलात्कार किया और उसका वीडियो भी बनाया। उस घटना के दो दिन बाद पीड़ित युवक थाने में रपट लिखाने के लिए गया। लेकिन चुनाव की व्यस्तता की बात कहकर उसकी रपट पांच दिनों के बाद लिखी गई। और एक सप्ताह के बाद आरोपियों की गिरफ्तारियां हुईं।

पीड़ित पक्ष की आवाज तो दबी ही रही, लेकिन मामला चुनावी मुद्दा बन गया। बसपा अध्यक्ष मायावती ने इस हादसे का जिक्र किया, तो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने चुनावी भाषणों में इस मामले को बड़े ही मार्मिक तरीके से पेश किया और मायावती को राजस्थान की कांग्रेस सरकार से समर्थन वापस ले लेने की सलाह दी। चुनाव भी कैसे बंद जुबान खोल देता है। जम्मू के कठुआ में हुए हादसे पर चुप्पी। दिल्ली में हर चार घंटे में हो रहे एक बलात्कार पर चुप्पी। हापुड़ की उस जली हुई महिला पर चुप्पी। इतनी सारी चुप्पियां अलवर की वीभत्स घटना से क्यों टुटी, यह फैसला कब और कौन करेगा? अभी तो केवल दिल्ली के अस्पताल में पड़ी जली हुई महिला की बात कानों में गूंज रही है-अच्छा हुआ, मैं जल गई। अब कोई मेरे साथ बलात्कार तो नहीं करेगा।

-लेखिका माकपा पोलित ब्यूरो की सदस्य हैं।

हरियाली और रास्ता

अंश, टीचर और सपना

अंश की कहानी, जिसे गरीब होने के बावजूद अपने सपनों से समझौता करना मंजूर नहीं था।

अंश रोज सुबह स्कूल जाता था। स्कूल से छुट्टी के बाद वह एक अस्तबल में घोड़ों की सफाई करता था, और रात में एक ढाबे पर वेटर का काम करता था। एक बार उसके स्कूल में क्लास टीचर ने बच्चों को 'मेरा सपना' विषय पर निबंध लिखने कहा। अंश ने 12 पन्नों का निबंध लिखा, जिसमें उसने बताया कि कैसे वह 200 एकड़ में घोड़ों का एक फार्म बनाना चाहता है, जिसमें 400 वर्गफुट का उसका अपना एक घर होगा और 50 घोड़े होंगे। यह निबंध लिखने के लिए उसने बहुत मेहनत की थी। अगले दिन बड़ी प्रफुल्लता के साथ उसने अपना निबंध क्लास टीचर को सौंप दिया। अंश को उम्मीद थी कि उसका निबंध सबसे अलग होगा। पर दो दिन बाद जब पेपर वापस मिले, तो अंश ने देखा कि टीचर ने उसे फेल कर दिया है। अंश रोते हुए टीचर के पास फेल होने की वजह पूछने गया। टीचर ने कहां, 'तुम बेहद गरीब हो, रात की रोटी का ठिकाना नहीं होता, दो-दो नौकरी करने के बाद भी अगले महीने की स्कूल की फीस जमा कर पाओगे या नहीं, यह तो तुम्हें पता नहीं। तुम कैसे घोड़ों के इतने बड़े फार्म के बारे में सोच सकते हो? कल फिर अपना निबंध लिखकर लाना। पर इस बार कुछ ऐसा लिखना, जो तुम सच में हासिल कर पाओ।' अंश उस दिन काम पर न जा सका। पिता ने उसे समझाया, 'बेटा, तुम्हारे सपने सिर्फ तुम्हारे हैं। और किसी को तुम्हारे सपने तय करने का हक नहीं। लेकिन तुम्हारे अंदर अपने सपनों को साकार करने का माद्दा होना चाहिए।'

अगले दिन अंश फिर वही निबंध लेकर अपनी टीचर के पास गया और उनसे बोला, 'आपने मुझे जो अंक दिए, वह मुझे मंजूर है, पर अपने सपने से समझौता करना मुझे मंजूर नहीं। जो अपनी काबिलियत से समझौता कर लेगा, वह कभी अपने सपनों को साकार नहीं कर सकेगा।'

हमारी काबिलियत कोई दूसरा आदमी तय नहीं कर सकता।

खुली खिड़की

बिजली की खपत

बिजली हमारे जीवन का अभिन्न अंग है। रोजमर्रा की जरूरतों के साथ इसका उपयोग बड़े उद्योग-धंधों को चलाने में किया जाता है। एक रिपोर्ट बताती है कि प्रति व्यक्ति सबसे ज्यादा बिजली की खपत कनाडा में है।

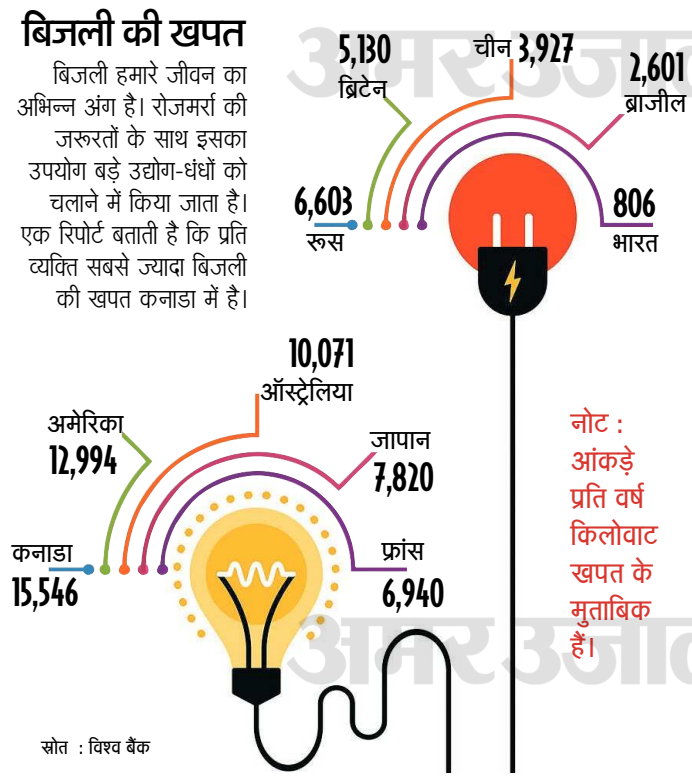

कड़वाहट नहीं बदली

तीर्थाटन जाने वाले कुछ ग्रामीणों ने संत तुकाराम से भी साथ चलने की प्रार्थना की। तुकाराम ने तीर्थाटन पर जाने में अपनी असमर्थता प्रकट की। लेकिन उन्होंने तीर्थयात्रियों को एक कड़वा घिया देते हुए कहा, कृपया इसे अपने साथ ले जाएं और जहां-जहां भी जाएं, इसे भी पवित्र जल में स्नान करा लाएं।

ग्रामीणों ने उनके गूढ़ार्थ पर गौर किए बिना ही वह कड़वा घिया ले लिया। अपने साथ उसे भी विभिन्न तीर्थों में स्नान कराते और मंदिरों में दर्शन कराते हुए वे अपने गांव वापस लौट आए और उन्होंने वह घिया तुकाराम को वापस दे दिया। तुकाराम ने सफल तीर्थयात्रा के उपलक्ष्य में सबको प्रीतिभोज पर आमंत्रित किया।

सत्संग

तीर्थयात्रियों को विविध पकवान परोसे गए। तीर्थों में नहाए हुए घिया की सब्जी विशेष रूप से बनवाई गई थी। जब उन लोगों ने उसे खाना शुरू किया, तो सबने पाया कि वह सब्जी कड़वी है। तुकाराम को जैसे घोर आश्चर्य हुआ। उन्होंने कहा, यह सब्जी कड़वी कैसे हो सकती है? यह तो उसी घिया से बनी है, जो तीर्थस्नान कर आया है। बेशक तीर्थाटन से पहले घिया कड़वा था, मगर आश्चर्य है कि तीर्थस्नान के बाद भी उसमें कड़वाहट विद्यमान है। यह सुनकर उन तीर्थयात्रियों को बोध हुआ कि गलत व्यक्ति तीर्थाटन के बाद भी नहीं बदलते। इसलिए अपना स्वभाव बदलना तीर्थ करने जाने से बेहतर है।

-संकलित